फलों का फटना

अनार में एक गंभीर समस्या

कमल महला सुरेन्द्र सिंह राठोड एवं मुकेश चंद भठेश्वर

विद्या वाचस्पति शोधार्थी छात्र (उद्यान)

श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान

e-ISSN No. 2583-0937

अनार में फलों को तोड़ने से पहले ही फलों का फटना एक गंभीर समस्या हैं। यह समस्या शुष्क क्षेत्रों में अधिक होती है, यह फल की गुणवत्ता को ही कम नहीं करता साथ ही उनमें रोग व कीट आक्रमण की संभावना को भी बढ़ावा देता हैं।

कारण:-

- भूमि में नमी का असंतुलन होना ।
- लम्बे समय बाद सिंचाई करना या बरसात का होना।
- अधिक तापमान के कारण पौधों एवं मृदा में जल की कमी हो जाती हैं। जिससे फलों की बाहरी त्वचा सख्त हो जाती है और बाद में फट जाती हैं।
- मृदा में बोरान की कमी होना ।
- गर्म एवं तेज हवाओं के कारण भी फल फट जाते हैं।
- कीट एवं रोग से संक्रमित फल फटने के प्रति आग्रही होते हैं।

प्रबंधन:-

- नियमित रूप से सिंचाई करें।
- अनार में फलों के फटने के प्रति प्रतिरोधी किस्म जैसे कंधारी, अलांदी, बेदाना बोसेक, डोलका और जालोर सीडलैस आदि की किस्मों को लगाना चाहिए।
- सामान्य बड़े आकार के एवं अधिक परिपक्व फल छोटे आकार वाले फलों की तुलना में फटने के प्रति अधिक सुग्राही होते हैं। अतः फलों की जल्दी तुड़ाई करने से फलों के फटने से रोका जा सकता हैं।
- जिब्रलिक एसिड़ (जी.ए.3) 15 पी.पी.एम. का छिड़काव करें।
- बोरान का (0.2 प्रतिशत) छिड़काव करें
- अत्यधिक हवा वाले क्षेत्रों में फलों को फटने से बचाने के लिए उत्तर-पश्चिम दिशा में गति अवरोधक वृक्षों की कतार लगाना चाहिए। जैसे *ग्रेविया, रोबस्टा, जामुन, शीशम* इत्यादि।